

EDUCATIONAL ASPECTS OF BHAGAVAD GITA IN OUR MODERN INDIAN SOCIETY

प्रियतोष घोष¹

¹अनुसंधान विद्वान, संस्कृत विभाग, सीकॉम कौशल विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, केंद्रदंगल, बीरभूम, पश्चिम बंगाल, भारत.

अमूर्त (ABSTRACT)

भगवद गीता कृष्ण और अर्जुन के बीच कुरुक्षेत्र युद्ध के मैदान में हुए प्रवचन का एक काव्यात्मक वर्णन है। जैसे ही अर्जुन ने अपने रिश्तेदारों को एक-दूसरे के खिलाफ लड़ते हुए देखा, वह अवाक रह गया। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को प्रेरित करने के लिए युद्ध के मैदान में भगवद गीता का उपदेश दिया। इसे वैदिक दर्शन के लिए सबसे अच्छा पाठ्य स्रोत माना जाता है। यह दर्शाता है कि जीवन कैसे जीना है बदले में आध्यात्मिक और भौतिक दोनों। शिक्षा का अर्थ भगवद गीता में कर्म, ज्ञान और भक्ति योग से जुड़ा हुआ है। शिक्षा की परिभाषा, इसके लक्ष्य, इसका महत्व, इसका पाठ्यक्रम, इसकी शिक्षा के तरीके, इसके मूल्यांकन के तरीके, और शिक्षक और छात्र की सभी भूमिकाएँ निकाली जा सकती हैं भगवद गीता। इस प्रकार, इस निबंध का उद्देश्य संपूर्ण भगवद गीता में पाए जाने वाले शैक्षिक विषयों की व्याख्या करना है।

कीवर्ड (KEYWORDS)- भगवद गीता, शिक्षा, कर्म और शैक्षिक दर्शन।

1. प्रस्तावना

अवलोकन (overview)

'द लॉर्ड्स सॉन्ग' भगवद गीता का शाब्दिक अनुवाद है। अनिच्छुक अर्जुन को युद्ध में शामिल होने के लिए मनाने के लिए भगवान कृष्ण अपने बौद्धिक भाषण का उपयोग करते हैं। अर्जुन को प्रेरित करने के लिए, भगवान कृष्ण ने अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए मार्गदर्शन के रूप में कुरुक्षेत्र के युद्ध के मैदान में उन्हें भगवद गीता सिखाई। अर्जुन को मार्गदर्शन देने के अलावा कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में, गीता उन सभी लोगों को एक सार्वभौमिक संदेश प्रदान करती है जो "होने या न होने" के निर्णयों के बीच उलझे हुए हैं। इसे वैदिक दर्शन में सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक माना जाता है। परिणामस्वरूप, भगवद गीता दर्शाती है कि भौतिक और आध्यात्मिक अस्तित्व कैसे बनाया जाए। भगवद गीता को सभी वैदिक दार्शनिक विचारों के मूल के रूप में देखा जाता है। गीता में कर्म, ज्ञान और भक्ति योग - तीन अलग-अलग तरीकों से शिक्षा को परिभाषित किया गया है - को जोड़ने पर बहुत काम किया गया है। शैक्षिक दर्शन के सभी पहलू, जैसे शिक्षा का उद्देश्य और महत्व, इसके तरीके और दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन के तरीके और शिक्षकों और छात्रों की भूमिका, भगवद गीता से निकाले जा सकते हैं। क्योंकि भगवद गीता में शिक्षा के हर तत्व शामिल हैं। शैक्षिक दर्शन, इस प्रकार इसे इस प्रकार माना जा सकता है। भगवद गीता में शिक्षा का महत्व तीन क्रोध (खोई, क्रोध, और) को त्यागकर खुशी, संतुष्टि और मोक्ष की प्राप्ति के लिए अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करना है। डर) एक स्थिर दिमाग और ज्ञान के साथ। यह हमारी भावनाओं और इच्छाओं को नियंत्रित करने, कार्रवाई का सही तरीका चुनने और कठिन परिस्थितियों से निपटने में हमारी सहायता करता है। यह हमें सिखाता है कि हम अपनी प्रेमपूर्ण और देखभाल करने वाली भावनाओं को नफरत और अन्य नकारात्मक भावनाओं से कैसे मुक्त करें। ताकि वे स्वाभाविक रूप से प्रवाहित हों और संपूर्ण मानवीय अनुभव को शामिल करें। सच्ची शिक्षा बच्चों को शैक्षणिक आनंद के अलावा जीवन में एक वास्तविक उद्देश्य भी देती है। चूंकि भगवद गीता सभी मान्यताओं का आधार है, इसलिए इसे शिक्षा और विचारधाराओं का पवित्र ग्रिल माना जाता है। क्योंकि इसमें सभी धर्मों और विचारधाराओं के मूल विचार शामिल हैं, इसलिए भगवद गीता को शिक्षा का पवित्र ग्रिल माना जाता है। यह आत्म-बोध का स्पष्ट ज्ञान और यथासंभव स्वच्छ ज्ञान प्रदान करता है।

2. भगवद गीता और शिक्षा- THE BHAGAVAD GITA AND EDUCATION

शिक्षा मानव पूर्णता को विकसित करने की प्रक्रिया है, जिसमें धार्मिक और कार्मिक जीवन के लिए जानना, करना, होना और बुद्धिमान होना शामिल है। भगवद गीता बताती है कि, अन्य शिक्षकों की तुलना में, स्वर्गीय शिक्षक, भगवान कृष्ण ने अवधारणाओं को निर्देशित नहीं किया। अपने छात्रों को पढ़ाने का। इस प्रकार की स्कूली शिक्षा का 'क्यों' गीता में बताया गया है। आज दुनिया में जो बच्चा मौजूद है वह न तो कोई खाली बर्तन है और न ही कोरी स्लेट। वह अपने पिछले अस्तित्व से कुछ राय, इंद्रियाँ, चरित्र लक्षण, मानसिक दृष्टिकोण आदि लेकर चलता है। वह अपने पिछले जीवन से विशिष्ट रुचियाँ, इंद्रियाँ, चरित्र लक्षण, मानसिक व्यक्तित्व लक्षण आदि लेकर आता है। माता-पिता अपने बच्चों को अपना शरीर देते हैं, लेकिन बच्चों की आत्मा उनकी अपनी होती है।

इससे वैयक्तिक भिन्नताओं की व्याख्या होती है। भगवद गीता का पाठ शिक्षा के बुनियादी सिद्धांत प्रदान करता है, जो इस बात पर प्रकाश डालता है कि सीखना एक सामाजिक और आध्यात्मिक आवश्यकता है। यह एक संपत्ति है, और आप रेत पर इमारत नहीं बना सकते।

3. भगवद गीता और शैक्षिक लक्ष्य(EDUCATIONAL GOALS AND BHAGVADGITA)

गीता के शैक्षिक लक्ष्य निम्नलिखित हैं-

1. आभासी ज्ञान बढ़ाने के लिए:

हमारे बच्चों में नैतिकता की भावना का अभाव है। अर्जुन को अपना कार्य करने के लिए गीता में कृष्ण द्वारा प्रेरणा मिलती है, जो अर्जुन की मूर्खता की ओर इशारा करते हैं। इस रुख के आधार पर, हमें मूर्खता को दूर करने और विद्यार्थियों को आभासी जानकारी तक पहुंच प्रदान करने की धारणा को अपनाना चाहिए।

2. व्यक्तित्व को आकार देने और संशोधित करने के लिए:

हर किसी के व्यक्तित्व में अच्छे (देवी-देवता) और बुरे (आसुरी) दोनों पहलू होते हैं। दूसरे तरीके से कहें तो, हममें से प्रत्येक में कौरवों (आसुरी) और पांडवों (धर्मी) के तत्व शामिल हैं। कृष्ण अर्जुन को उसके जन्मजात गुणों को प्रकाश में लाकर सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। यह है

बिल्कुल वही जो एक शिक्षक को अपने शिष्य के लिए पूरा करना चाहिए। इसलिए, शिक्षा का लक्ष्य छात्रों को उनके व्यक्तित्व को विकसित करने और उन्नत करने में मदद करना होना चाहिए।

3. व्यक्तिगत और सामाजिक लक्ष्यों को एक साथ जोड़ना: अर्जुन अपने सामाजिक कर्तव्य और युद्ध के मैदान पर अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बीच उलझा हुआ है। यह उस पर निर्भर था कि वह युद्ध करे या न करे। उनके सामाजिक कर्तव्य के कारण उन्हें देश में शांति की स्थापना के लिए संघर्ष करना पड़ा। कृष्ण ने उसे निर्देश दिया कि वह अपनी पसंद की स्वतंत्रता छोड़ दे, गांधीव पकड़ ले और दुष्टों-उनके समर्थकों से युद्ध करे।

4. इसलिए, हम कह सकते हैं कि गीता कहती है कि "चीजों के व्यक्तिगत और सामाजिक पहलुओं का समन्वय करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।" कृष्ण का इरादा उन्हें उनकी इच्छा से दूर करना नहीं है। कृष्ण अर्जुन को उसके पवित्र स्व-कर्तव्य (स्वधर्म) के लिए समझा रहे हैं। अर्जुन अंततः विपक्ष से मुकाबला करने का स्वतंत्र निर्णय लेता है। इस प्रकार कृष्ण अंतःकरण की समझ जगाने में सफल होते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में, हमें बिल्कुल यही रास्ता अपनाना चाहिए।

5. किसी की सोचने-समझने की क्षमता में सुधार करना: अर्जुन लड़ने के उद्देश्य पर सवाल उठाते हैं। गीता की शिक्षाएं उनके संदेह से उत्पन्न होती हैं। कृष्ण ने अपनी तार्किक और बौद्धिक क्षमताओं का उपयोग करके अर्जुन के संदेह को दूर कर दिया। इसलिए, गीता के दर्शन का प्राथमिक लक्ष्य अर्जुन (औसत आदमी) की सोचने और तर्क करने की क्षमता को बढ़ाना है ताकि वह अपने निर्णय स्वयं ले सके। यही हमारी शिक्षा का लक्ष्य भी होना चाहिए।

6. कर्तव्य के मूल्य को साबित करने के लिए: एक व्यक्ति के अधिकारों और जिम्मेदारियों को संतुलित किया जाना चाहिए। अपने कर्तव्य को पूरा करने से ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है, कृष्ण अर्जुन (स्वधर्म-पालन) को सूचित करते हैं। भगवद गीता और पाठ्यक्रम का अध्ययन करने वाले छात्रों से पहले इस दृष्टिकोण को उजागर करना महत्वपूर्ण है।

गीता दो प्रकार के ज्ञान की चर्चा करती है:-

1. ज्ञान में भौतिक ज्ञान (विज्ञान, कला, इंजीनियरिंग आदि)।

2. शरीर और आत्मा को आध्यात्मिक रूप से समझना।

हम अपनी शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिक ज्ञान को नज़रअंदाज कर देते हैं। परिणामस्वरूप, वैश्विक धन के विभिन्न रूपों को प्राप्त करना अधिक आम हो गया है। अध्यात्मवाद की अलग से समझ मानव जाति को शाश्वत शांति प्रदान कर सकती है। इसलिए, हमारी शैक्षिक प्रणाली में "शाब्दिक मुद्दों से संबंधित अध्ययन के साथ-साथ मनुष्य के जीवन की बौद्धिक विशेषताओं को भी उचित स्थान प्रदान किया जाना चाहिए"।

भगवद गीता के साथ शिक्षण दृष्टिकोण: Teaching Approaches with the Bhagavad Gita:

बात करने की तकनीक,

प्रश्न-उत्तर की पद्धति,

प्रदर्शन का तरीका,

आधुनिक दृष्टिकोण (उचित मूल्यांकन के साथ संयुक्त तार्किक विश्लेषण),

करके ज्ञान प्राप्त करना।

गीता और शिक्षक(Gita and teachers): गीता यह विचार प्रस्तुत करती है कि एक शिक्षक को न्यायसंगत होना चाहिए। एक सच्चा शिक्षक न केवल ज्ञान प्रदान करता है बल्कि उसका उदाहरण भी देता है। संक्षेप में कहें तो, प्रशिक्षक अपने शरीर और आत्मा दोनों की वास्तविक प्रकृति को बनाए रखने के लिए पर्याप्त सावधान रहता है।

छात्र और भगवद गीता(Student and bhagvadgita): गीता एक छात्र को एक विद्यार्थी के बजाय एक शिक्षार्थी के रूप में परिभाषित करती है। हालाँकि, आदर्श विद्यार्थियों का पहला और आखिरी गुण अपने शिक्षक के सामने हार मान लेना और विषय में अपने ज्ञान की कमी को स्वीकार करना है। ईमानदारी, करुणा, अपने प्रशिक्षक के प्रति सम्मान और विश्वास एक उत्कृष्ट छात्र के मूलभूत गुण हैं। गीता में कहा गया है कि शिक्षार्थी को अपने व्यक्तित्व में तीन प्रमुख अवगुणों से बचना होगा: काम, क्रोध और लोभ। वफादारी के लिए प्रशिक्षक का सम्मान आवश्यक है, लेकिन इसका मतलब मूर्ख होना नहीं है।

4. निष्कर्ष(CONCLUSION)

भगवद गीता शिक्षा को लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति दोनों की नींव के रूप में परिभाषित करती है, लेकिन यह आध्यात्मिक समझ को शिक्षा के रूप में संदर्भित नहीं करती है; बल्कि, यह आध्यात्मिक समझ और भौतिक तत्वों दोनों को ध्यान में रखता है। भगवद गीता का पाठ नैतिक दायित्वों, एक शांतिपूर्ण नैतिक वातावरण, आध्यात्मिकता और वास्तविक जीवन के बीच सद्भाव और आध्यात्मिक और भौतिक वास्तविकता के बीच अंतर को परिभाषित करता है। शिक्षा में सुधार के लिए प्रणाली, हमें अपने ग्रंथों में पाई गई गुप्त जानकारी को उजागर करने के लिए काम करना चाहिए। लेकिन हमारे समाज और हमारे विश्वविद्यालयों में, इस सिद्धांत पर बहुत कम वास्तविक विचार किया गया है। यह हमारी शैक्षिक प्रणाली के पश्चिमी विचारों पर बनी नींव पर विकसित होने का परिणाम हो सकता है।

5. सन्दर्भ(REFERENCES)

- [1] भावुक, डी. पी. एस. (2011)। अध्यात्म और भारतीय मनोविज्ञान: भगवद गीता से सबक। नया दिल्ली.स्प्रिंगर
- [2] प्रियंका, (2013)। शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में भागवत गीता का प्रभाव। से पुनःप्राप्त [www.shodh](http://www.shodh.net) नेट.
- [3] घिमिरे जनार्दन (मार्च 2013), भगवद गीता में शिक्षा का अर्थ, जर्नल ऑफ एजुकेशन और अनुसंधान, खंड 3, क्रमांक 1, पृष्ठ 65-74।
http://shodhnga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/76149/9/09_chapter%206.pdf •
- [4] फॉसे, एल.एम. (2007)। भगवद गीता: मूल संस्कृत और अनुवाद।
<http://www.goodreads.com/review/show/99876257> से लिया गया।
- [5] Bhaktivedanta Swami Prabhupada, A. C. Bhagavad Gita as IT IS. Bhaktivedanta Book Trust: 2021. Print.
- [6] Shrimad Bhagavad Gita. Gita press: Gorakhpur. Print.
- [7] Manickam, Ramchandran and Bhavna Ramchandran sharma. Need of Bhagavad Gita
- [8] Concepts in the Present Scenario of Professional Education. Research Gate. 2015.
- [9] [https://www.thehindu.com/society/history-and-culture/how-indian-thought-influenced-ts-](https://www.thehindu.com/society/history-and-culture/how-indian-thought-influenced-ts-eliot/article25122620.ece)
- [10] [eliot/article25122620.ece](https://www.thehindu.com/society/history-and-culture/how-indian-thought-influenced-ts-eliot/article25122620.ece)
- [11] <http://ignited.in/a/58387>